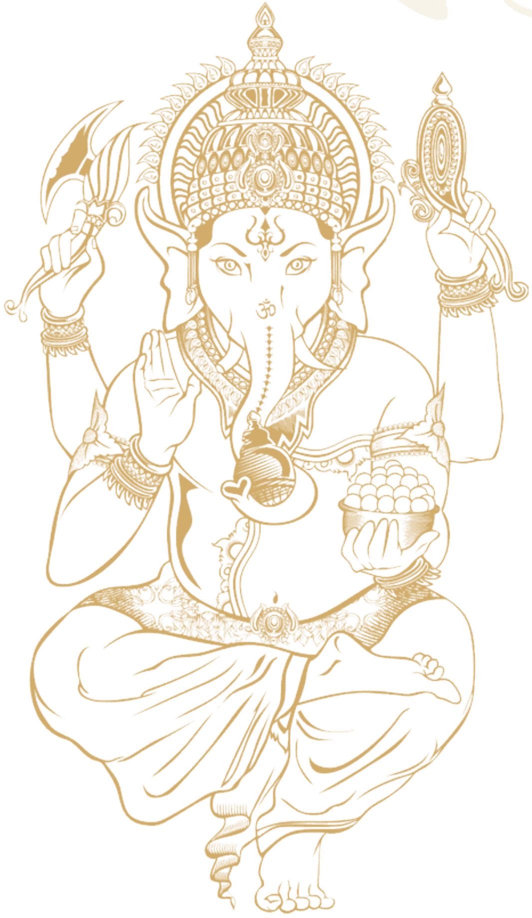

Gudiya

15 Feb 2026

12:54 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121531801

तिथि 15/02/2026 **समय** 12:54:00 **वार** रविवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:27
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	: 22:14:08 घं	गण	: मनुष्य
वेलान्तर	: 00:14:08 घं	योनि	: नकुल
सूर्योदय	: 06:59:52 घं	नाड़ी	: अन्त्य
सूर्यास्त	: 18:11:02 घं	वर्ण	: वैश्य
चैत्रादि संवत	: 2082	वश्य	: जलचर
शक संवत	: 1947	वर्ग	: सिंह
मास	: फाल्गुन	युँजा	: अन्त्य
पक्ष	: कृष्ण	हंसक	: भूमि
तिथि	: 13	जन्म नामाक्षर	: जा-जयन्ती
नक्षत्र	: उत्तराषाढ़ा	पाया(रा.-न.)	: रजत-ताम्र
योग	: व्यतिपात	होरा	: गुरु
करण	: वणिज	चौघड़िया	: काल

विंशोत्तरी		योगिनी	
सूर्य 1वर्ष 7मा 18दि		संकटा 2वर्ष 2मा 4दि	
सूर्य		संकटा	
15/02/2026		15/02/2026	
05/10/2027		21/04/2028	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	15/02/2026		00/00/0000
बुध	30/05/2026		15/02/2026
केतु	05/10/2026	उल्का	01/10/2026
शुक्र	05/10/2027	सिद्धा	21/04/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:42:00	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	मंगल	---	0:00			
सूर्य			02:23:26	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	केतु	शत्रु राशि	1.99	कलत्र	पितृ	विपत
चंद्र			06:22:02	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	बुध	सम राशि	1.14	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	23:44:08	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	उच्च राशि	1.14	आत्मा	भ्रातृ	विपत
बुध			19:29:14	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	सम राशि	1.16	भ्रातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		21:46:56	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.39	अमात्य	धन	प्रत्यारि
शुक्र			11:53:08	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.05	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि			05:55:11	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.13	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु	व		14:45:31	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		14:45:31	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

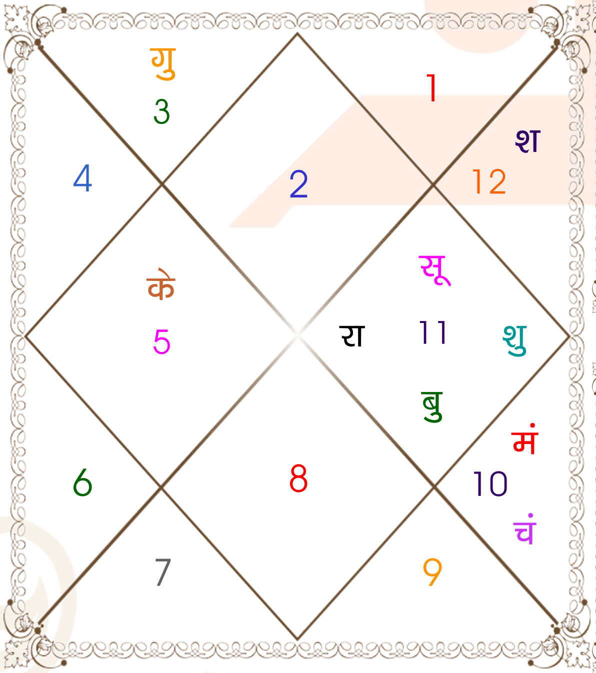

चन्द्र कुंडली

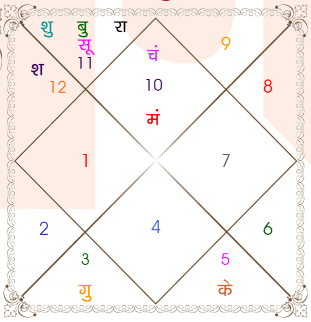

नवमांश कुंडली

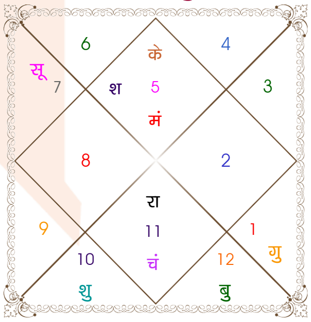

सर्वाष्टकवर्ग

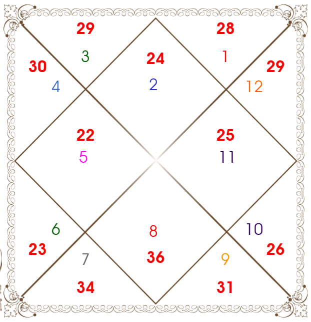

दशमांश कुंडली

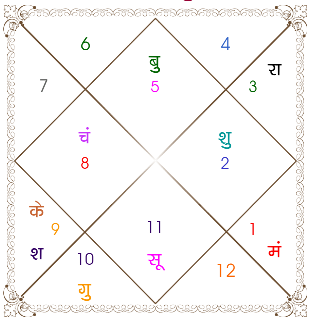

Pt.Yogendra Kumar Sharma
B-622Murlipra Scheme Jaipur
919314234454

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि नकुल, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य, वर्ग सिंह तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "ज" या "जा" से प्रारम्भ होगा यथा- जानकी , जगदम्बा आदि।

समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होगी तथा सभी सामाजिक जन आपको हादिक मान सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप में सात्विक गुणों की प्रधानता रहेगी तथा तामसिक गुणों का सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही आप अपने समस्त कार्यों को शान्त स्वभाव से सम्पन्न करेंगी तथा विषम परिस्थितियों में भी घबराहट का प्रदर्शन नहीं करेंगी। जीवन में आप नाना प्रकार के सुख संसाधनो सें युक्त होकर उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगी। धन दौलत से आप सर्वथा सम्पन्न रहेंगी तथा इसका आप के पास अभाव कम ही रहेगा। आप विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने तथा कई कार्यो को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगी अतः समाज में एक विदुषी के रूप में भी सम्माननीय रहेंगी एवं ख्याति प्राप्त करेंगी।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सु खी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप अन्य लोगों के साथ में हमेशा विनम्रता का व्यवहार करेंगी अतः सभी लोग आपकी इस विनयशीलता से प्रभावित रहेंगे एवं आपकी प्रशंसा भी करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धाभाव रहेगा तथा धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने में भी आप प्रयत्न शील रहेंगी। आप के मित्र भी काफी संख्या में रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर उसका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हादिक रूप से उसका आभार भी प्रकट करेंगी। अतः सभी लोग आपकी इस कृतज्ञता की भावना से सन्तुष्ट रहेंगे। आप बिना किसी भेदभाव के समाज में सभी लोगों का सहयोग करेंगी तथा सभी वर्गो के मध्य समान रूप से लोकप्रिय रहेंगी।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपका कद लम्बा होगा एवं शरीर में भी स्थूलता विद्यमान रहेंगी। आप एक साहसी तथा निर्भय प्रकृति की महिला होंगी एवं बहादुरी से अपनी सांसारिक समस्याओं का सामना करते हुए उनका समाधान करेंगी। झगड़े या विवाद आदि कार्यों में भी आप सफल रहेंगी

Pt.Yogendra Kumar Sharma
B-622Murlipra Scheme Jaipur
919314234454

तथा आपके शत्रु हमेशा आपसे भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आप में दानशीलता की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा यथाशक्ति आप अपने जीवन में दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्द लोगों को दान देने के लिए यत्नशील रहेंगी। साथ ही आप के हृदय में कोमलता एवं करूणा की भावना भी रहेगी तथा इस भावना के पालन के लिए आप सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप सदैव सत्कार्यों को करने में ही रूचिशील रहेंगी तथा आपके अच्छे कार्यों के द्वारा अन्य लोग सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे लाभान्वित भी होंगे। आप समस्त वैभव से युक्त होकर प्रभुता सम्पन्न रहेंगी एवं समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। आप को गृहस्थ सुख पूर्ण रूप से प्राप्त होगा तथा पुत्रादि संततियों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही आपका सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा परन्तु आप में अभिमानी प्रवृति भी होगी जिसका आप समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक कद ऊंचा तथा ललाट विस्तृत होगा। आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा तथा आखें भी सुन्दरता को प्राप्त होंगी साथ ही कंठ एवं कान दीर्घता से युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसका आपको विस्तृत ज्ञान होगा। ठंड से आप व्याकुलता का आभास करेंगी एवं इसको सहन करने में अपने आप को असमर्थ समझेंगी। सत्य के प्रति आप निष्ठावान रहेंगी तथा इसके साथ ही धर्म में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अन्य लोगों के दिखावे के लिए इसका अनुशरण करेंगी। समाज में सर्वत्र आपका आदर एवं सम्मान किया जाएगा तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। कभी कभी आप थोड़ा बहुत गुस्से का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगी। सर्वजनों के प्रति अपने मन में सामान्यतः प्रेम तथा स्नेह का ही भाव रखेंगी तथा अनावश्यक द्वेष या घृणा किसी से भी नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों के साथ में मित्रता करने को विशेष इच्छा रखेंगी। लेखन कार्य में आपकी रूचि रहेगी तथा कविता सृजन में आप निपुण हो सकेगी लेकिन आप में उत्साह की न्यूनता रहेगी तथा लालची प्रवृति होने के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना भी करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति एवं पुत्र सहित परिवारिक समस्याओं में व्यस्त रहेंगी। यदा आपकी प्रवृति अन्य लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत होने की भी रहेंगी तथा उन्ही के कथनानुसार आप किसी भी कार्य करने के लिए उद्यत हो जाएंगी। साथ ही आलस्य का भी आप पर प्रभाव रहेगा। अतः कोई भी कार्य समय पर पूरा होना असम्भव रहेगा। आपको घूमने फिरने तथा यात्रादि का अत्याधिक शौक रहेगा। अतः आपका अधिकाँश समय भ्रमण तथा यात्रा में ही व्यतीत होगा। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा अतः शारीरिक बल भी मध्यम ही रहेगा। आप साहसी एवं निर्भय प्रकृति की महिला होंगी तथा अगम्य स्थानों तथा कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। साथ ही दया एवं करूणा का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार इस प्रवृति का आप अनुपालन भी करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में कई बार आप वात से उत्पन्न रोगों से पीड़ित भी होंगी एवं उनसे कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। साथ ही सर्वप्रकार के सत्वगुणों से भी सुशोभित रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप परिवार में सामान्य सम्मानर्जित करेंगी परन्तु कुल या परिवार की रीति तथा

मर्यादा का नित्य वृद्धि करने के लिए प्रयत्नशील तथा कृत संकल्प होंगी। आप अपने पति को पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण में रखने में सफल रहेंगी तथा वे भी अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों का आप ज्ञानार्जन करेंगी एवं समाज में एक विदुषी का स्थान बनाएंगी। आपको सुन्दर पुरूषों से हमेशा प्रशंसा की प्राप्ति होती रहेगी। माता के प्रति आपका विशेष सेवा तथा सम्मान का भाव रहेगा। साथ ही पुत्रादि संततियों से युक्त होकर आप हमेशा प्रसन्नता को प्राप्त करेंगी। बन्धु वर्ग से आपको यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी तथा धनैश्वर्य का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा। दानशीलता की भावना से भी आप सदैव सुशोभित रहेंगी तथा समयानुसार इसका अनुपालन भी करेंगी। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा सुख को प्राप्त करने के लिए आप नित्य चिन्तन शील रहेंगी एवं इसे प्राप्त करने के लिए हमेशा तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।

मानसागरी

आप जीवन में किसी अन्य संबंधी मित्र या व्यक्ति की सम्पत्ति प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगी। इसके साथ ही अन्य लोगों के विषय में भी चिन्तित रहेंगी तथा यत्नपूर्वक उनकी भलाई के लिए कार्य करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त सलाह देने आदि कार्यों में भी आप चतुराई का प्रदर्शन करेंगी। बन्धुवर्ग को भी आप हादिक सहयोग प्रदान करेंगी। आप एक साहसी महिला भी होंगी तथा निर्भयता से अपने अधिकाँश कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।

जातक दीपिका

आपका गीतशास्त्र के प्रति हार्दिक अनुराग रहेगा एवं इस क्षेत्र में आप विशेष योग्यता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति एवं कोमलता दर्शनीय रहेंगी एवं इससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।

जातका भरणम्

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा रहेगी। आप के अर्न्तमन में दया एवं करूणा का भाव सदैव विद्यमान रहेगा। अतः दीन दुःखियों की आप हमेशा सहायता करने एवं

उनकी भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगी। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा। अतः समय समय पर अन्य जनों के सम्मुख अपनी इस प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। आप शारीरिक बल से पूर्ण रहेंगी तथा अपने अधिकाँश कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगी। आपको विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कलाओं का भी विस्तृत ज्ञान रहेगा अतः एक विदुषी के रूप में आप आदरणीया रहेंगी। आप शारीरिक सुकान्ति से सुशोभित रहेंगी एवं परिवार के अतिरिक्त अन्य बहुत से लोग आपके द्वारा सुख की प्राप्ति करेंगे।

आप धनैश्वर्य से सम्पन्न सर्वमान्य महिला होगी। आपकी आखें देखने में अत्यन्त ही सुन्दर रहेंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप दक्षता प्राप्त कर सकेंगी। आपका वर्ण गोरवर्ण रहेगा तथा समाज में आप एक प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित महिला होंगी एवं नगर के लोगों पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा तथा आपकी बातों का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप नैसर्गिक रूप से परोपकारी प्रवृति की रहेंगी तथा अन्य लोगों की भलाई के कार्यों को आप अत्यन्त ही दक्षता से सम्पन्न करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे पूर्ण रूपेण प्रभावित रहेंगे। आप एक धनैश्वर्य से सुसम्पन्न महिला होंगी तथा अन्य धनाढ्य एवं सम्पन्न लोग भी आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे। आप एक उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा कई सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं में आपका मुख्य सहयोग रहेगा। माता पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी एवं आपका भी उनके प्रति विशेष सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा

तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनिकरण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का प्रारम्भ न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने

इष्ट नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच धातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में कमी आएगी तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों में वृद्धि होगी।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Pt.Yogendra Kumar Sharma
B-622Murlipra Scheme Jaipur
919314234454